संसद सदस्य
(राज्य सभा)

सत्यमेव जयते

DATE- 22/06/2015

Member of Parliament Mr. KC Tyagi (JDU), MO. Salim (CPM), Mr. Rajiv Shukla (Congress), Mr. D Raja (CPI), Mr DP Tripathi (NCP) has condemning the appointment of Gajendra chouhan as a chairman of FTII.

Film and Television Institute of India (FTII) glorifies the heritage of Indian cinema. FTII has constatntly endeavoured to set critical benchmarks for the film industry and nurtured professional specialist inn the field of film making and other allied aspects.

FTII with the medium of cinema has created, preserved and propagated the cross cultural heritage. In the recent decades FTII has nourished filmmakers and technicians like sanjay leela bhansali, rajkumar hirani, prakash jha, rusool putookutty, umesh kulkarni, abhijit majumdar who has set excellent benchmarks in the Indian cinema.

While on the other side this institution has produced actors like om puri, smita patil, nasiruddin shah. Legacy does not end here. Eminent singer and lyricist gulzar, cartoonist r.k. laxman, film director adoor gopalakrishnan had held various administrative posts.

Student of FTII were protesting against political appointments of gajendra chouhan. This fresh appointment in FTII has raises grave questions regarding the logic and process followed in the selection procedure. Dismissal of students's protest is not only disappointing but also ignoring ftII's pluralistic views.

List made for for the appointment of chairman comprises of lyricist Gulzar, Shyam Benegal and Adoor Gopalakrishnan. But the govt and ministry of information and broadcasting willingly ignored eminent name and appointed gajaendra chouhan as the chairman of this prestigious institute.

Gajendra's popularity is limited to petty TV serial like Mahabharata and he also have limited understanding of this medium. His appointment to the post is due to his connection with the ruling party and his campaign for bjp in the last lok sabha election.

After acting in Mahabharat as yudhisthir he has moved himself towards soft porn movies which is a blot on Indian cinema. In these conditions protests by the students is natural.

Before fresh controversy of FTII those in those people were appointed in Film Censor Board, Academy of Fine Arts, National Museum, National Book Trust, Delhi University and IIT who were considered propagator of the agenda of RSS and BJP.

Political appointment in these intuitions is just a way to ruin the future of student. This why we are opposing the appointment and demand rolling back of govt's decision.

Kc Tyagi
Member of Parliament (RS)

22/06/2015

संसद सदस्य श्री केसी त्यागी (जदयू), मो. सलीम (सीपीएम), श्री राजीव शुक्ला (कांग्रेस), श्री डी राजा (सीपीआई), श्री डीपी त्रिपाठी (एनसीपी) (एफटीआईआई) में गजेंद्र चौहान की राजनैतिक नियुक्ति का विरोध करते है.

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) भारतीय सिनेमा की विरासत को गौरवान्वित करता है.
एफटीआईआई सतत फिल्म उद्योग में आलोचनात्मक कीर्तिमान गढ़ता आया है. संस्थान ने सिनेमा निर्माण के विभिन्न पहलुओं के पेशेवर विशेषज्ञों की पौंध को सींचा है.
सिनेमा के माध्यम से एफटीआईआई ने सांस्कृतिक विरासत के सृजन, संरक्षण एंव संवर्द्धन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

हाल के दशकों में एफटीआईआई ने भारतीय सिनेमा में सर्वोत्तम मानदंड स्थापित करने वाले संजय लीला भंसाली, राजकुमार हिरानी, प्रकाश झा, रुल पुकडी, उमेश कुलकर्णी विभुपुरी, अभिजीत मजूमदार जैसे फिल्म निर्माता और तकनीशियनों की फौज खड़ी की है.

वहीं अभिनय के क्षेत्र में, ओमपुरी, स्मिता पाटिल, जया बच्चन और नसरुद्दीन शाह जैसे कई अभिनेता इस संस्थान ने दिए है. एफटीआईआई के प्रशासनिक पदों को गुलजार, आर. के लक्ष्मण, अदूर गोपालकृष्णन आदि महान हस्तियों ने समय-समय पर सुशोभित किया है.

पिछले कई दिनों से एफटीआईआई पुणे के छात्र गजेंद्र चौहान की राजनैतिक नियुक्ति का विरोध कर रहे है. एफटीआईआई में इस ताजी नियुक्ति ने चयन प्रकिया के तर्कों और चरणों के संबंध में गंभीर सवाल खड़े किए है. इसके सदस्यों द्वारा छात्रों के विरोधों को सिरे से खारिज कर देना निराशाजनक होने के साथ ही संस्थान के बहुलवादी दृष्टि को नजरअंदाज भी करता है.

इस पद पर नियुक्ति हेतु मशहूर गीतकार गुलज़ार, फिल्मकार श्याम बेनेगल और अदूर गोपालकृष्णन का नाम उम्मीदवारों की सूची में था. लेकिन सरकार और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने अन्य सभी नामों की उपेक्षा करते हुए पिछले बीते 9 जून को श्री गजेंद्र चौहान की नियुक्ति कर दी गई.

श्री गजेंद्र चौहान की प्रसिद्धि और इस माध्यम की समझ 'महाभारत' और कुछ छोटे-मोटे धारावाहिकों में काम करने तक सीमित है और इस पद तक उनकी पहुंच का आधार उनका पिछले ग्यारह साल से बीजेपी से जुड़ा होना है. इन्होंने बीते लोकसभा चुनाव में हरियाणा में बीजेपी के लिए चुनाव प्रचार भी किया था.

गजेन्द्र चौहान ने 'महाभारत' सीरियल में युधिष्ठिर की भूमिका के बाद कई भारतीय सिनेमा को बदनामी दिलाने वाली 'सॉफ्ट पोर्न' फिल्मों में भूमिकाएं निभाई है. ऐसे में छात्रों का आंदोलित होना स्वाभाविक है.

मोदी सरकार के आने बाद शिक्षा और कला क्षेत्र में कोई ऐसा संस्थान नहीं बचा है जहां विवादास्पद और महत्त्वहीन लोगों की थोक में नियुक्तियां न हो रही हों. जो संस्थान आज बचे भी हैं वहां भी ऐसी तैयारियां जोरों पर हैं. इससे पहले फिल्म सेंसर बोर्ड, ललित कला अकादेमी, राष्ट्रीय संग्रहालय, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली विश्वविद्यालय और आईआईटी जैसें उच्च शिक्षण संस्थानों में संघी और भाजपाई एजेंडे को लागू करने वालों को तरजीह दी गई .

इससे ज्यादा आक्रोश की बात क्या होगी कि 'एफटीआईआई' जैसे उत्कृष्ट संस्थान का राजनीतिकरण किया जा रहा है. इस संस्थान में राजनैतिक नियुक्ति करना छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है. इसलिए हम इसका विरोध करते है और सरकार से मांग करते है कि वह इस नियुक्ति को वापस ले और अध्यक्ष पद के योग्य व्यक्ति को नियुक्त करे.

केसी त्यागी
(सांसद राज्यसभा)